2nd Semester (आधुनिक काव्य) HINDI–Honours

महादेवी वर्मा

जन्म-२६ मार्च १९०७ , स्थान-फरुखाबाद। मृत्यु- ११ सितंबर १९८७।

माता-हेमरानी देवी ,पिता-गोविंद प्रसाद वर्मा।

काव्य-संकलन -नीहार (१९३०), रश्मि (१९३२), नीरजा (१९३५), सांध्यगीत (१९३६), यामा (१९४०)।

दीपगीत -(१९८३), अग्निरेखा -(१९९०) ।

आरम्भ में ब्रजभाषा फिर खड़ीबोली में रचनाएँ ।

पुरस्कार- पद्मभूषण -१९५६ ,मंगलाप्रसाद पारितोषिक पुरस्कार-१९४४, भारत -भारती- १९८२ ,

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार-यामा (१९८२), पद्मविभूषण-१९८८ ।

महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री हैं.। इनकी विरह का जलजात जीवन ,क्या पूजा क्या अर्चन रे,

मैं नीर भरी दुःख की बदली ,हे चिर महान तथा मधुर- मधुर मेरे दीपक जल ये पाँच कवितायें

आप के पाठ्यक्रम में निर्धारित की गई हैं ।

महादेवी वर्मा की कविताओं में भाव की गहनता तथा विचार की गम्भिरता है। इनमें व्यथा ,पीड़ा ,जिज्ञासा ,आशा और आकांक्षा है।इनकी पीड़ा भोगी हुई पीड़ा है। उसमें कोई बनावटीपन नहीं है । संसार की पीड़ा को देख इनका मन करुणा से भर उठता है।ये अपने दुःख को संसार के सुख में में विलीन कर देती हैं । कवयित्री जिस मार्ग से होकर कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ती हैं,वे नहीं चाहती

की कोई उसका अनुसरण करे । इनका हृदय सहज ही द्रवित हो जाता है ।इनकी रचनाओं में दुःख है, करुणा है ,अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणयनिवेदन है । सुख और दुःख में ये समान भाव की अनुभुति करती हैं । कवयित्री संसार को देख चिंतित हैं -

मैं नीर भरी दुःख की बदली ---------- ,
रज कण पर जल कण हो बरसी
नव जीवन -अंकुर बन निकली ।

महादेवी नीर भरी दुःख की बदली बन संसार का ,मानवता का कल्याण करना चाहती हैं । मानव समाज और धरती को शीतलता प्रदान करना चाहती हैं।

पेड़ और धरती की तरह महादेवी भी अपने अंत;करण में साधना की आग प्रज़्वलित कर संसार को सुख पहुंचाना चाहती हैं। महादेवी के काव्य में वेदना की प्रधानता है -

- वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास ,

अश्रु चुनता दिवस इसका ,अश्रु चुनती रात ,

जीवन विरह का जलजात ।

महादेवी वर्मा वेदना में अपने जन्म और करुणा में आवास को स्वीकार करती हैं ।

आंसुओं का कोष उर ,दृग अश्रु की टकसाल ,

काल इसको दे गया पल -आंसुओं का हार ,

वे हृदय को आंसुओं का कोष मानती हैं ।समय ने इन्हें आंसुओं का हार पहनाया । अतःइन्हें आधुनिक युग की मीरा की संज्ञा दी गयी ।

महादेवी ने अपने काव्य में प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का चित्रण किया है -

नभ में गर्वित झुकता न शीश

पर अंक लिए हैं दीन क्षार ,

मन गल जाता नत विश्व देख ,

महादेवी प्रकृति के सौन्दर्य पर मुग्ध हो उस पर चेतना का आरोपण करती हैं ।वे हिमालय को सच्चा साधक मानती हैं -

टूटी है कब तेरी समाधि ----------।

तन तेरी साधकता छू ले ,

मन ले करुणा की थाह नाप ।

वे हिमालय की साधना को आत्मसात करना चाहती हैं । उसके हृद्य की करुणा की गहराई को मापना चाहती हैं ।

इनके काव्य में रहस्य तत्व प्रधान है ।अल्प आयु से ही इनमें सांसारिकता के प्रति विराग की भावना रही है ।ये आध्यात्मिक अधिक हैं। इनका परमात्मा के प्रति प्रेम पार्थिव प्रेम से ऊपर है ,जिसमें हृदय

मस्तिष्कमय तथा मस्तिष्क हृदयमय बन गया है - -

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल ,

युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल ,

प्रियतम का पथ आलोकित कर ।

ये अपने लघु जीवन को ईश्वर का मंदिर मानती हैं । अज्ञात प्रियतम की प्राप्ति के लिए कवयित्री हर क्षण, ,हर पल ही नहीं युगों-युगों तक दीपक की भांति जलते रहना चाहती हैं । परिवेश को आलोकित करना चाहती हैं ।इनमें मिलन की आतुरता है । अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय निवेदन है-

तू जल -जल जितना होता क्षय / यह समीप आता छलनामय ।

मधुर मिलन नें मीट जाना तू ।

महादेवी कि भाषा संस्कृतनिष्ठ है । इन्होंने अपने गीति काव्यों की रचना चित्रात्मक शैली में की है । इनके काव्य में संगीतात्मकता है । ये मधुर और प्रवाहपूर्ण हैं । इन्होंने अपने काव्य में अद्भभुत भावमय शब्द चित्र अंकित किया है ।